

व्यंजन के भेद

डॉ. संतोष येरावार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग
देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जि. नांदेड़

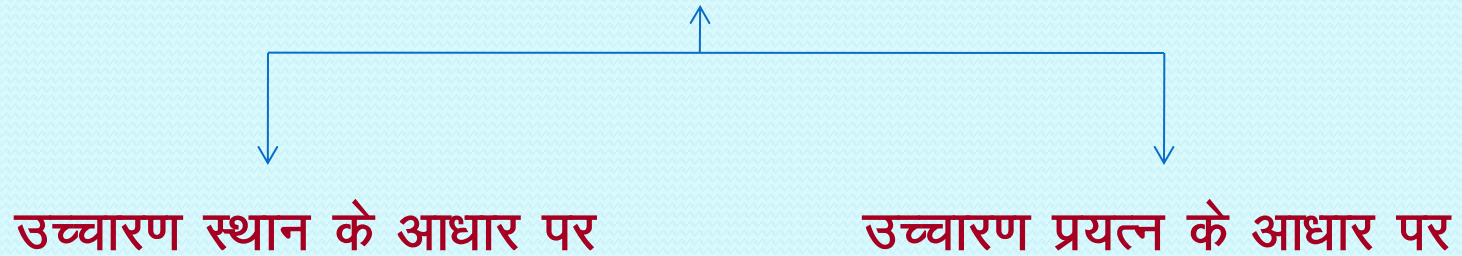
❖ व्यंजन की परिभाषा :

जिन ध्वनियों के उच्चारण में मुख विवर से निकलने वाली हवा मुखविवर में अवरूद्ध होती हुई, मुखावयों को स्पर्श करती हुई बाहर निकलती है उन ध्वनियों को व्यंजन कहते हैं।

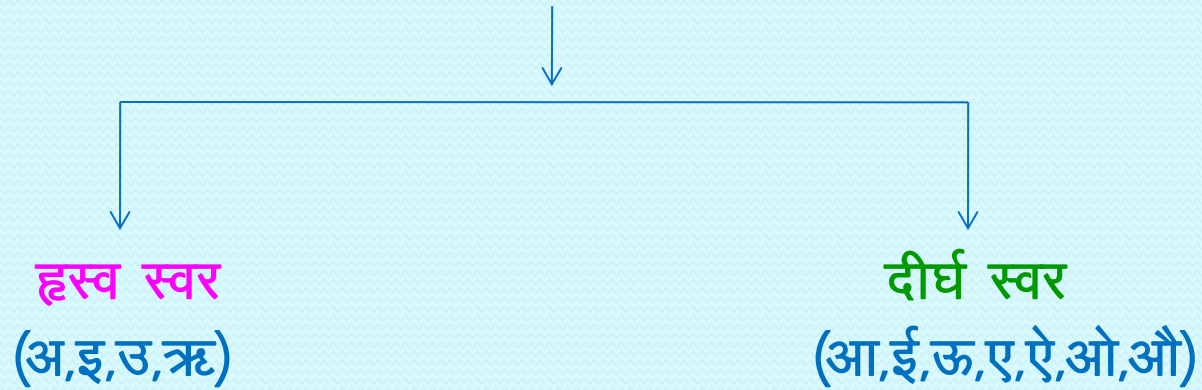
❖ व्यंजन का वर्गीकरण :

सामान्यतः व्यंजन का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है—

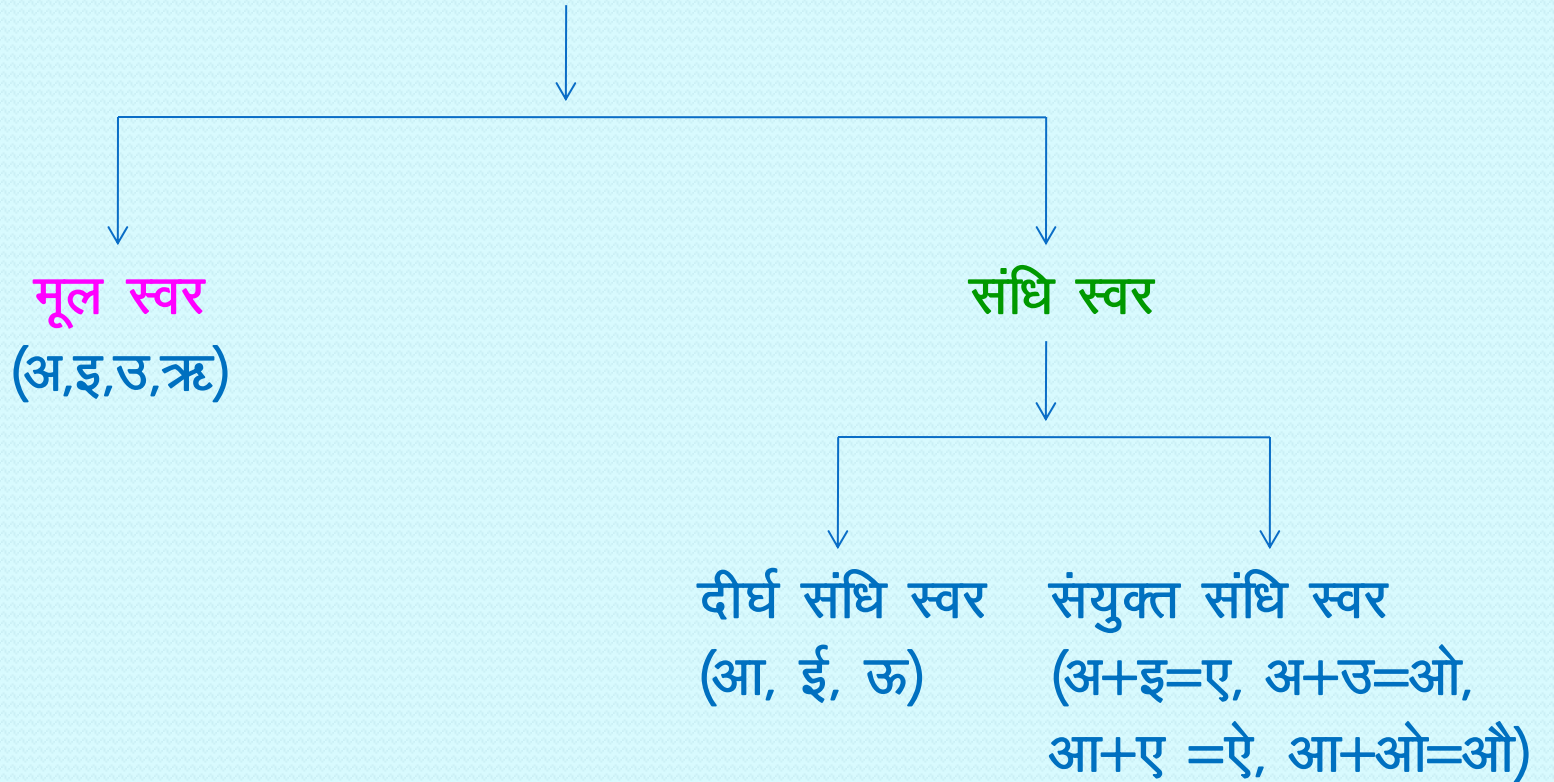
व्यंजन का वर्गीकरण



➤ उच्चारण स्थान के आधार पर



➤ उत्पत्ति के आधार पर





उच्चारण स्थान के आधार पर

जिह्वा के भागों
के आधार पर

अग्र स्वर
(इ,ई,ए,ऐ)

मध्य स्वर
(अ)

पश्च स्वर
(आ,उ,ऊ,ओ,औ)

जिह्वा की ऊँचाई
के आधार पर

संवृत
(इ,ई,उ,ऊ)

अर्द्ध संवृत
(ए,ओ,)

विवृत
(आ)

अर्द्ध विवृत
(ऐ,औ)

ओष्ठ की स्थिति
के आधार पर

वर्तुल
(उ,ऊ)

अर्द्ध वर्तुल
(ओ,औ)

अवर्तुल
(इ,ई,ए,ऐ)

➤ जाति के आधार पर

सवर्ण स्वर
(सजातीय स्वर)
(अ,आ,इ,ई,उ,ऊ)

असवर्ण स्वर
(विजातीय स्वर)
(अ+इ = ए, आ+ए = ऐ,
अ+उ = ओ, आ+ओ = औ)

धन्यवाद !

